भगतसिंह ने कहा

अगर कोई सरकार जनता को उसके इन मूलभूत अधिकारों से वंचित रखती है तो जनता का केवल यह अधिकार ही नहीं बल्कि आवश्यक कर्तव्य भी बन जाता है कि ऐसी सरकार को समाप्त कर दें।

–

हम वर्तमान ढांचे के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के पक्ष में हैं। हम वर्तमान समाज को पूरे तौर पर एक नये सुगठित समाज में बदलना चाहते हैं। इस तरह मनुष्य के हाथों मनुष्य का शोषण असम्भव बनाकर सभी के लिए सब क्षेत्रों में पूरी स्वतंत्रता विश्वसनीय बनायी जाये। जब तक सारा सामाजिक ढांचा बदला नहीं जाता और उसके स्थान पर समाजवादी समाज स्थापित नहीं होता, हम महसूस करते हैं कि सारी दुनिया एक तबाह कर देने वाले प्रलय-संकट में है।

(कमिश्नर, विशेष ट्रिब्यूनल, लाहौर साजिश केस,लाहौर के नाम भगतसिंह सहित छह क्रान्तिकारियों द्वारा लिखे पत्र से)

एक अपील

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' सारे देश में चल रहे वैकल्पिक मीडिया के प्रयासों की एक कड़ी है। हम सत्ता प्रतिष्ठानों, पफण्डिंग एंजेंसियों, पूंजीवादी घरानों, एवं चुनावी राजनीतिक दलों से किसी भी रूप में आर्थिक सहयोग लेना घोर अनर्थकारी मानते हैं। जनता का वैकल्पिक मीडिया सिपर्फ जन संसाधनों के बूते खड़ा किया जाना चाहिए—हमारी यह दृढ़ मान्यता है।

अतः हम अपने सभी पाठकों—शुभचिन्तकों—सहयोगियों से अपील करते हैं कि वे अपनी ओर से अधिकतम संभव आर्थिक सहयोग भेजकर परिवर्तन के इस हथियार को मजबूती प्रदान करें।

■ पाठक मंच

सहगामिनी

मैं औरत हूं, मात्र औरत
जिसे तुमने कहा था सीता, वही सीता
जो नहाई थी अग्नि में, समाई थी धरती में,
दी थी परीक्षाएं मर्यादाओं की
ताकि कहला सको, तुम मर्यादा पुरुषोत्तम
इतिहास के किसी पीले पड़े पृष्ठ पर
मैं ही पांचाली भी हूं
जिसे तुम्हीं ने लगाया था दांव पर
तुम्हीं ने हरा था चीर, करना चाहा था निर्वस्त्र
और हे पौरुष के धनी,
लज्जा बचाने को तुम्हीं बने थे कृष्ण
और आज जब क्रोध से कांपते हुए
रक्ताभ आंखों से निगलजाने वाली दृष्टि गड़ाकर
चीखते हो कि, आखिर चाहती क्या हो
तब तुम्हारे सम्मुख, खड़ी होती हूं मैं
तुम्हारी मां नहीं, बहन नहीं,
शर्मीली प्रेयसी भी नहीं
बल्कि मानवता का आधा हिस्सा
पर क्या मेरी समझ इतना बड़ा जुर्म है, जिससे
इस कदर भयभीत हो।
रुको, हाथ उठाने से पहले,
मैं विद्रोहिणी बनना नहीं चाहती
न ही क्रान्ति करना चाहती हूं,
मैं तो एक जीवन जीना चाहती हूं
जो प्रातः खिले फूलों की तरह ताजा हो
तुम्हारे बिना नहीं, तुम्हारे साथ
कंधे से कंधा मिलाकर
मेरे साथी पुरुष, सहगामिनी बनना चाहती हूं,
अनुगामिनी नहीं।

डा. शोभा बारहट, जयपुर

स्वतन्त्रता

तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो
तुममें कुछ ऐसा है
जो मेरे मन की गहराइयों को छू लेता है
तुम सृजनशील हो, संवेदनशील हो
तुममें एक सुन्दर भविष्य की
जमीन दिखाई पड़ती है
तुम्हारी कलम, तुम्हारी रचनाएं
जीवन्त हैं, तुम्हारी आंखों की तरह
जो तुम सोचते हो, रचते हो
जैसे सपने देखा करते हो तुम
वैसे ही मैं भी सोचा, रचा
और देखा करती हूं,
जीवन के प्रति तुम्हारा दृष्टिकोण
मेरे बहुत क़रीब है
क़रीब-क़रीब मेरा भी वही लक्ष्य है
जो तुम्हारा है
और कुछ अनुचित न होगा
अगर मैं कहूं, कि इन तमाम बातों के कारण
मैं तुमसे प्रेम भी करती हूं
फिर भी मेरे दोस्त
मुझे तुमसे भी ज्यादा
एक चीज़ प्रिय है
और वह है, मेरी स्वतंत्रता
मेरी स्वतंत्र चेतना, स्वतंत्र चिन्तन
और स्वतंत्र रचना
जो तुमसे प्रभावित तो है
पर संचालित नहीं
जो तुम्हारा साहचर्य तो चाहती है
पर प्रभुत्व नहीं
तुम्हें और अपनी आज़ादी को
एक साथ चाहती हूं मैं
दोनों में से किसी को भी खोना
असह्य है, मेरे लिये
लेकिन फिर भी
अगर तुम अड़ ही गये
अपने प्रभुत्व की खातिर
तो मैं,
स्वतंत्रता को चुन लूंगी।

मनीषा पाण्डेय, इलाहाबाद

महत्वपूर्ण पर नियमित करें

पत्रिका के रूप में प्रकाशित हो रहा 'आह्वान' लगातार बेहतरी की ओर बढ़ रहा है। सारगर्भित एवं आह्वान मूलक सामग्री हम छात्रों के भीतर एक नये ऊर्जा का संचार कर रहा है। लेकिन इसकी अनियमितता हमें ज्यादा खटकती है। तमाम दिक्कतों के बावजूद इसे नियमित निकालें तो बेहतर होगा।

'जनवरी-मार्च '01 अंक में यूं तो सभी सामग्री महत्वपूर्ण है, लेकिन 'एक सपने को टालते रहने से क्या होता है' और 'नई सदी में भगतसिंह की स्मृति' कविता ज्यादा प्रेरणादायी है। 'तरुणाई का तराना' उपन्यास पढ़ने के प्रति आकर्षण पैदा तो हुआ है, लेकिन यह उपलब्ध नहीं है। इसके प्रकाशन की प्रतीक्षा रहेगी।

मनोज कुमार, आवास-विकास, सूरजकुण्ड कालोनी, गोरखपुर